श्रीगणेशाय नमः | पातु नो वेदवृक्षः | कठ-कपिष्ठल-ऋषिभ्यो नमः

महर्षिवाल्मीकिसंस्कृतविश्वविद्यालयः

कपिष्ठलम्, हरियाणा

कपिष्ठल-कठ संहिता शोध केन्द्र

महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय, कपिष्ठल द्वारा आयोजित

द्विदिवसीया राष्ट्रीय कार्यशाला (ऑनलाइन/ऑफलाइन)

विषय : कपिष्ठल-कठ संहिता में रुद्र पूजा का स्वरूप

Rudra Worshiping as descripted in Kapiṣthala-Katha Saṃhitā

दिनाङ्क - 17-18 फरवरी 2023

स्थान - महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय,टीक परिसर, कुरुक्षेत्र रोड़, कैथल

संरक्षक -

प्रो.रमेश चन्द्र भारद्वाज

कुलपति

महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय,

कपिष्ठल, हरियाणा-136027

संयोजक -

डॉ.अखिलेश कुमार मिश्र

संयोजक, कपिष्ठल-कठ संहिता शोध केन्द्र,

वेदविभागाध्यक्ष

महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय,

कपिष्ठल, हरियाणा -136027

Email- hod.veda.mvsu@gmail.com

सम्पर्कसूत्र – 7631274367

डॉ.नरेश शर्मा

संयोजक, भारतीय ज्ञान-परम्परा, शोध एवं प्रशिक्षण संस्थान,

ज्योतिष एवं आयुर्वेदविभागाध्यक्ष

महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय,

कपिष्ठल, हरियाणा -136027

Email- hod.jyotish.mvsu@gmail.com

सम्पर्कसूत्र – 7082811234

सह-संयोजक –

डॉ. हरीश कुमार

संयोजक, महर्षि वाल्मीकि शोधपीठ एवं प्राध्यापक, हिन्दू-अध्ययन,

महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय, कपिष्ठल, हरियाणा

Email- rishibhawan@gmail.com, सम्पर्क सूत्र - 7988376657

कपिष्ठल-कठ संहिता शोध केन्द्र का परिचय

मान्यवर सुविदित हो कि हरि की हरितिमा से सृजित हरिस्वरूप हरियाणा प्रान्त के कैथल (कपिष्ठलक्षेत्र) में हरियाणा सर्वकार के अधिनियम 20/2018 के द्वारा महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय स्थापित किया गया है, एवं विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की धारा 2(F) से सम्बद्ध है । यह विश्वविद्यालय संस्कृत एवं संस्कृति संरक्षण हेतु सन्नद्ध है । यहाँ अङ्ग सहित आगम प्रतिष्ठित है, तो सामाजिक समसद्भाव हेतु सभी सङ्कल्पित हैं । प्राच्यविद्या एवं संस्कृति को समृद्ध करने की दिशा में महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय आरम्भ से ही अक्षुण्ण योगदान देता आ रहा है । यहाँ मुख्यतः वेद, व्याकरण, ज्योतिष, साहित्य, दर्शन, योग, वैदिक गणित, हिन्दू-अध्ययन विषय के शिक्षण की सम्यक् व्यवस्था के साथ – साथ कर्मकाण्ड विषयक सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक प्रशिक्षण की सुदृढ व्यवस्था है। प्राच्य विद्या के अन्तर्गत वेद, वेदाङ्ग, ब्राह्मण, श्रौतसूत्र, आरण्यक-आदि विषयों के अध्यापन द्वारा छात्रों को वैषयिक एवं प्रायोगिक ज्ञान प्रदान किया जाता है। विश्वविद्यालय के प्रमुख उद्देश्यों में से एक है : - हरियाणा प्रान्त में सरस्वती नदी के तट पर संवर्धित वैदिक सभ्यता एवं संस्कृति का राष्ट्रीय, अंतःराष्ट्रीय स्तर पर प्रामाणिक रूप से संस्थापन एवं प्रचार-प्रसार । विशेषरूप से कैथल (कपिष्ठल) जनपद की वैदिक परम्पराओं के संरक्षण एवं संवर्धन सम्बन्धी अकादमिक अनुष्ठानों का आयोजन करना ।

उपर्युक्त उद्देश्य की सम्पूर्ति हेतु महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय के द्वारा महर्षि कपिष्ठल की भूमि पर विद्वत परिषद् ने दिनांक 30-06-2022 को आयोजित पञ्चम् बैठक में कपिष्ठल-कठ संहिता शोध केन्द्र की स्थापना की ।

यह शोध केन्द्र कृष्णयजुर्वेदीय कपिष्ठल-कठ संहिता के समग्र वैदिक साहित्य के अध्ययन व अनुसन्धान हेतु मार्गप्रशस्त करता है। इस शोध केन्द्र के आद्याधिष्ठाता माननीय कुलपति महोदय जी है। जिनके सत्प्रयत्न से यह अनुसन्धान केन्द्र शोधक्षेत्र में अग्रगण्य स्थान प्राप्त करेगा व वैदिक संस्कृति की पुनः स्थापना का मार्ग प्रशस्त करेगा ।

इसी उपक्रम में विश्वविद्यालय के द्वारा द्वि-दिवसीय कपिष्ठल-कठ संहिता में रुद्र पूजा का स्वरूप एवं तत्सम्बन्धिनी कार्यशाला का आयोजन माननीय कुलपति महोदय जी के निर्देशन में आयोजित किया जा रहा है ।

कार्यशाला/सम्मेलन का स्वरूप

वेदश्शिवः शिवो वेदः वेदाध्यायी सदा शिवः, कलौ चण्डीमहेश्वरौ प्रकृत पदावली का तात्पर्य वेद के माहात्म्य को परिभाषित करते हुए मानव में देवभाव को स्थापित करता है। मनुष्य सदा अपने अभीष्ट प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील रहता है परन्तु प्रतिबन्धक की अधिकता होने के कारण वह अपने इप्सित विषयों को प्राप्त नहीं कर पाता है। मानवीय अभीष्ट साधन के तौर पर भगवती श्रुति आविर्भूत हुई और सर्वत्र अन्न,वसन,स्वर्णप्रभृति पदार्थों को वितरण करती हुई शब्द समुदाय में लीन हो गई। वह भगवती का शाब्दिक समुदाय ही वेद कहलाता है । भारतीय संस्कृति का मूलाधार वैदिक शब्द सम्पदा है । जिसका चार वेदों के रूप में सम्पादन कृष्णद्वैपायन भगवान् वेदव्यास ने हरियाणा, विशेष रूप से कैथल के भौगोलिक क्षेत्र में किया ।

कालान्तर में महर्षि कपिष्ठल के द्वारा प्रतिष्ठित-श्रुति कपिष्ठलप्रदेश में अनिष्टनिवारण एवम् इष्टप्राप्ति के लिए उपस्थिता भगवती कपिष्ठल-कठसंहिता कृष्णयजुर्वेदीय भाग के रूप में प्रसिद्ध हुई। सौभाग्यवश महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय कपिष्ठलप्रदेश में विराजमान है । हरयाणा (हरियाणा) 'हर' (शिव) के समाराधकों का प्रदेश है । जिसके अधिकांश गांवों में शिवालय स्थापित है । श्रावण मास में सम्पूर्ण हरियाणा शिवमय हो जाता है । जिसकी जड़ें वैदिक रुद्र (शिव) की उपासना में निहित है । भारतीय समाज की धार्मिक-परम्पराओं को वैदिक संस्कृति से जोडने हेतु विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति महोदय, जो संस्कृति साधना के प्रति सिद्धसाधक के तौर पर प्रसिद्ध है, ने यह कार्यक्रम – (द्विदिवसीया कार्यशाला) समायोजित की है।

इस अकादमिक अनुष्ठान में कपिष्ठलसंहिता के अनुसार रुद्र पूजा व उसका माहात्म्य पर विवेचना प्रस्तावित है । यह रुद्र समस्त विद्याओं का अधिष्ठाता है तो समाज में समानभाव का निर्माता भी है। इस सन्दर्भ में कपिष्ठल का यह वचन द्रष्टव्य एवम् अनुसन्धेय है –

नमः शंभवे च मयोभवे च ।

नमः शंकराय च मयस्कराय च ।

नमः शिवाय च शिवतराय च ।

कार्यशाला का उद्देश्यः-

शैक्षिक –

1.वर्तमान में लुप्त कपिष्ठल-कठ संहिता के स्वरूप को पुनः प्रकाशित करना।

2.कपिष्ठ-कठ संहितोक्त सामाजिक एवं धार्मिक परम्पराओं का विश्लेषण करना।

3.कपिष्ठल-कठ संहिता में स्थित रुद्रस्वरूप का व्याख्यान करना।

सामाजिक उद्देश्य –

1.रुद्र-यज्ञ के माध्यम से सामाजिक समरसता को स्थापित करना

2.पर्यावरणशुद्धि व प्राकृतिक चेतना को जीवन्त करना।

3. व्यक्ति एवं समाज में नैतिक मूल्यों की स्थापना ।

4.यज्ञ के माध्यम से मङ्गलमयी परिस्थिति व सामूहिक भावना का विस्तार करना।

विश्वविद्यालयीय कर्त्तव्य –

हरियाणा प्रान्त की सरकार एवं जनता की अपेक्षाओं के अनुरूप विश्वविद्यालय को भारतीय वैदिक संस्कृति के अध्ययन, अध्यापन एवं शोध का सर्वोत्कृष्ट अकादमिक केन्द्र के रूप मे विकसित करना ।

उपर्युक्त कर्तव्यों को ध्यान में रखते हुए महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय द्वारा द्विदिवसीय कार्यशाला समायोजित की गई है जिसमें सहभागिता प्रदान कर कपिष्ठल-कठ संहिता के वैशिष्ट्य को जानकर समाज में इसके महत्त्व को प्रकाशित करें।

उपविषय –

कार्यशाला / सम्मेलन के उपविषय अधोलिखित हैं –

- **वैदिक परम्परा में रुद्र पूजा का स्वरूप**
- **शुक्लयजुर्वेद संहिता में रुद्र पूजा का स्वरूप**
- **तैत्तिरीय संहिता में रुद्र पूजा का स्वरूप**
- **मैत्रायणी संहिता में रुद्र पूजा का स्वरूप**
- **काठक संहिता में रुद्र पूजा का स्वरूप**

- **सामवेद संहिता में रुद्र पूजा का स्वरूप**
- **अथर्ववेद संहिता में रुद्र पूजा का स्वरूप**
- **वेदाङ्गों में रुद्र पूजा का स्वरूप**

आमन्त्रित विद्वान् -

1. प्रो. सन्निधान सुदर्शन जी
पूर्वकुलपति, वैदिक विश्वविद्यालय तिरुपति, आन्ध्रप्रदेश ।

2. प्रो.ओम प्रकाश पाण्डेय
पूर्व संस्कृत विभागाध्यक्ष, लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ ।

3. प्रो. रामराज उपाध्याय
पौरोहित्य विभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय नई दिल्ली ।

4. प्रो. ए. एस. अरावमुदन्, मीमांसा विभाग,
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय नई दिल्ली ।

5. प्रो. रामानुज उपाध्याय
वेद विभागाध्यक्ष, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय नई दिल्ली ।

6. प्रो. जगदीश प्रसाद सेमवाल
पूर्व निदेशक, वी वी आर आई, होशियारपुर, पंजाब विश्वविद्यालय ।

पंजीकरण प्रक्रिया एवं शुल्क -

- शिक्षकगण - 500
- शोधार्थी - 200
- विद्यार्थी -100

पंजीकरण हेतु लिंक - https://forms.gle/U3NPTE5VMzsWWR8bA